शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग कोल्हापुर.

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु. **विद्या अप्पासाहेब देसाई** द्वारा एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत "**रंगमंच और प्रासंगिकता के सन्दर्भ में प्रेमचंद के 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटक का मूल्यांकन**" लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 28 MAY 2007

28.05.07

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

डॉ. भरत धोंडीराम सगरे
एम्.ए., एम्. फिल्., पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 001.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **कु. विद्या अप्पासाहेब देसाई** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "**रंगमंच और प्रासंगिकता के सन्दर्भ में प्रेमचंद के 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटक का मूल्यांकन**" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। मैं इनके शोधकार्य से पूरी तरह संतुष्ट हूँ। प्रस्तुत शोधविषय पर शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में शोधकार्य संपन्न नहीं हुआ है।

स्थान : सातारा.

तिथि : 28 MAY 2007

शोध निर्देशक

(डॉ. भरत धोंडीराम सगरे)

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 28 MAY 2007

शोध छात्रा

(कु. विद्या अप्पासाहेब देसाई)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा

दुनिया की किसी भी घटना को कहानी, सिनेमा, काव्य तथा नाटक आदि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अतः लोग बचपन से लेकर कहानी को पढ़ने के साथ सिनेमा तथा नाटक को देखना और सुनना पसंद करते हैं। मैं इनसे अलग नहीं फिर भी पढ़ने से ज्यादा सुनना और देखना मनोवैज्ञानिक तौर पर हमेशा ही बेहतर रहा है। यह अलग बात है। मैंने सोचा की नाटक के द्वारा किसी कहानी या कथावस्तु का अविष्कार किया जाता है, तो इसतरह हम थोड़ा ध्यान क्यों न दे की यह नाटक कैसे बनता है ? जो मनुष्य के दिल तक किसी कहानी को हू-ब-हू पहुँचा देता है। केवल यही जिज्ञासा मेरे मन में थी। महाविद्यालयीन जीवन से मुझे नाटक विधा ने आकर्षित किया है। अवकाश के समय हिंदी नाटक पढ़ना मेरी विशेष रूचि रही है। मैं एम्. ए. की परीक्षा के उपरांत छुट्टियों में अलग-अलग साहित्यकारों के नाटक पढ़ती थी। उन्हीं दिनों प्रेमचंद का 'संग्राम', 'कर्बला', नाटक पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुई। 'संग्राम' एवं 'कर्बला' प्रेमचंद के सामाजिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक नाटक है। परिणामस्वरूप रंगमंच, अभिनय एवं प्रासंगिकता के संदर्भ में पढ़ने में मेरी रूचि और बढ़ती गयी। नाटक की कथावस्तु पढ़ने की अपेक्षा सुनना और देखना मैं पसंद करती हूँ और नाटक पढ़ने से ज्यादा उसे रंगमंच पर दृश्यों के रूप में देखना और भी पसंद करती हूँ इसी कारण मैं 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटकों का रंगमंच एवं प्रासंगिकता का अध्ययन करने का मैंने निर्णय लिया। मेरा यह निर्णय सुनकर गुरूवर्य डॉ. भरत सगरे जी ने मुझे इस विषय पर शोध-कार्य करने की अनुमति दी। परिणामस्वरूप **''रंगमंच और प्रासंगिकता के सन्दर्भ में प्रेमचंद के 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटक का मूल्यांकन''** इस विषय पर एम्. फिल्. का शोध-कार्य करना मैंने तय किया। मेरे शोध निर्देशक डॉ. भरत सगरे जी की प्रेरणा से प्रेमचंद के 'संग्राम' और 'कर्बला' नाटकों का मूल्यांकन इस विषय को चुना।

विषय चयन का महत्त्व

हिंदी साहित्य में नाटककार नाट्य सृजन में अपना योगदान देते आ रहे हैं। उनमें प्रेमचंद श्रेष्ठ साहित्यकार है। उन्होंने अपने नाटकोंद्वारा साहित्यिक धरातल पर समाज में शोषित किसान और उनकी प्रासंगिकताओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनका साहित्य वास्तविक है। जो यथार्थवादी

होकर जीवन में नवीनता का स्फुरण करता है। समाज का धार्मिक एवं सामाजिक का यथार्थ की ओर उन्मुख होना समाज की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। प्रेमचंद के साहित्य में शोषित जनता की कहानी है। ऐसे जनजीवन के प्रति उनके मन में सहानुभूति रही है। समाज में स्थित समस्याओं को हल करने का उनका दृष्टिकोण रहा है। अतः इनके नाटक व्यक्ति और समाज के लिए प्रेरणा देनेवाले नाटक हैं। रंगमंच, अभिनय और प्रासंगिकता की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। उनके नाटक 'संग्राम', 'कर्बला' नाटकों के बारे में बात यह है कि इसकी रंगमंच की दृष्टि से अनुसंधान का अभाव है। मेरा लघु शोध-प्रबंध इस अभाव पूर्ति का विनम्र प्रयास है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ जिज्ञासाएँ निर्माण हुई थीं।

1. प्रेमचंद के व्यक्तित्व का उनके साहित्य पर कैसा प्रभाव पड़ा है ?
2. प्रेमचंद को समाज के किस वर्ग ने प्रभावित किया है, जिससे उन्हें साहित्य लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई ?
3. प्रेमचंद के नाटकों में कौनसी समस्याओं को उद्घाटित किया हैं ?
4. रंगमंचीयता की दृष्टि से प्रेमचंद के नाटक कहाँ तक सफल हुए है ?
5. प्रेमचंद के साहित्य में नारी का स्थान क्या है ?
6. प्रेमचंद का साहित्य किस तरह से आज भी प्रासंगिक है ?

अनुसंधान के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया गया है। अध्ययन के सुविधा हेतु मैंने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है।

✷ अध्याय विभाजन

✷ प्रथम अध्याय - "प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इस अध्याय में प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है।

प्रेमचंद के कलम का सिपाही के रूप को स्पष्ट कर साहित्य और समाज, मानव जीवन और साहित्य, साहित्य की उपयोगिता आदि बातों का विवेचन किया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म, माता-पिता, शिक्षा, नौकरी, विवाह, मृत्यु। व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं के अंतर्गत कठोर परिश्रमी, सच्चे समाज सुधारक, देशभक्त, गांधीवादी से प्रभावित प्रेमचंद, आदर्श की स्थापना करनेवाले प्रेमचंद यथार्थ की पहचान, प्रेमचंद साहित्य का श्रीगणेश। प्रेमचंद के कृतित्व के अंतर्गत उपन्यासकार प्रेमचंद, कहानीकार

प्रेमचंद में राजनीतिक कहानियाँ, मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, ऐतिहासिक कहानियाँ, कहानी संग्रह, नाटककार प्रेमचंद, पत्रकार प्रेमचंद, निबंधकार प्रेमचंद, अनुवाद ग्रंथ, बाल साहित्य - शिशु साहित्य इसी अंतर्गत प्रेमचंद के समग्र साहित्य का परिचय दिया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ द्वितीय अध्याय - "प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों का संक्षिप्त परिचय"

इस अध्याय में नाटक की व्युप्तत्ति, नाटक का विकास में - प्रसादयुग, द्विवेदीयुग, आधुनिक युग। नाट्यभाषा में नाटकीय संरचना और भाषा, नाटक की भाषिक संरचना, संवाद संरचना और प्रकार्य, संवाद और रंगमंच, नाट्य संरचना और शैलीय उपकरण। प्रेमचंदयुगीन नाट्यसाहित्य में नाटककार प्रेमचंद, नाटक लिखने की प्रेरणा। कथावस्तु के विवेचन में कथावस्तु, कथावस्तु के प्रकार में मुख्य या प्रासंगिक कथावस्तु, कथावस्तु के उपकरण अंतर्गत अर्थप्रकृतियाँ, कार्यावस्थाये सन्धि-स्थल। पात्रों की रचना प्रक्रिया। नाटकों की कथावस्तु में मुख्य कथा, प्रासंगिक कथा या कथावस्तु का विकास आदि बातों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है और अंत में निष्कर्ष दिया है।

✷ तृतीय अध्याय - "प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों की रंगमंचीयता"

इस अध्याय में रंगमंच की व्युप्तत्ति, अर्थ, परिभाषा, मर्यादा, मंचसज्जा के प्रकार - चित्रांकित मंचसज्जा, प्रकृतिवादी मंचसज्जा, प्रतीक मंचसज्जा, रंगमंच का विकास में भारतेंन्दुयुगीन हिंदी रंगमंच, प्रसादयुगीन हिंदी रंगमंच, प्रेमचंदयुगीन नाटकों का रंगमंच, रंगमंच के उपकरण के अंतर्गत ध्वनि संकेत, गीत योजना, संवाद योजना, प्रकाश योजना वेशभूषा एवं केशभूषा। रंगमंच प्रस्तुति एवं दर्शकीय संवेदना अंत में आलोच्य नाटकों की रंगमंच इन सब तत्त्वों का मूल्यांकन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

✷ चतुर्थ अध्याय - "प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों में अभिनय"

इस अध्याय में अभिनय शब्द की व्युत्पत्ति, अभिनय शब्द का कोशगत् अर्थ, अभिनय की परिभाषा - संस्कृत, हिंदी, अँग्रेजी विद्वान। नाटक और अभिनय का संबंध, नाटकों में अभिनय का महत्त्व, अभिनय के प्रकार में - अंगिक अभिनय, वाचिक अभिनय, आहार्य अभिनय, सात्विक अभिनय। अभिनय के विकास में - भारतेंदु युगीन, प्रसादयुगीन, प्रेमचंदयुगीन, परिहास। प्रेमचंद के नाटकों में अभिनय की दृष्टि से संग्राम और कर्बला इन नाटकों का मूल्यांकन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

✷ **पंचम् अध्याय - ''प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों में प्रासंगिकता''**

इस अध्याय में प्रासंगिकता का अर्थ एवं स्वरूप, प्रेमचंद का प्रासंगिक के संदर्भ में दृष्टिकोण, प्रेमचंद साहित्य की प्रासंगिकता तथा संग्राम और कर्बला की तत्कालीन प्रासंगिकता और समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया है।

✷ **उपलब्धियाँ**

✷ **सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

आधार ग्रंथ

सन्दर्भ ग्रंथ

हिंदी कोश ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

समाचार पत्र

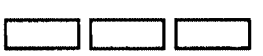

ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरुजनों हितचिंतको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

मेरे शोध निर्देशक लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के अधिव्याख्याता डॉ. भरत सगरे जी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है। मैं उनके सहयोग से ही अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा कर पाई हूँ। मैं उनकी सदा ऋणी रहूँगी।

श्रद्धेय - गुरुवर्य हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पांडुरंग पाटील, डॉ. पद्मा पाटील, डॉ. शोभा निंबाळकर, डॉ. आशा मणियार, डॉ. सुलोचना अंत्तरेड्डी आदि के समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन ने मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ती रही। इन सभी की मैं आभारी हूँ। विभाग की अधिव्याख्याता डॉ. शोभा निंबाळकर ने समय-समय पर मुझे शोध विषयक कई जानकारी दी तथा सही मार्गदर्शन दिया उनके प्रती में आभारी हूँ।

इस लघु-शोध प्रबंध की पूर्णता में मेरे स्वर्गवासी पिता अप्पासाहेब की स्मृति सदैव मुझे प्रेरित करती रही।

मेरी आदरणीय माता श्रीमती पार्वती, मामा - अण्णासाहेब, हणमंतराव, मामी सौ. महादेवी, मौसी श्रीमंती, बहन की लड़की सुप्रिया, मेरे भाई विनोद और संतोष यह सभी बराबर के हिस्सेदार हैं। जिन्होंने मुझे पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान जिनसे हमेशा प्रेरणा एवं मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहा वे प्रा. प्रकाश साळवी अतः उनकी भी मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस अवसर पर मेरे वरिष्ठ सहपाठियों में प्रा. सचिन कांबले, प्रा. अजय कांबले, श्री. उत्तम आळतेकर, श्री. प्रकाश नाईक, श्री. सयाजी गायकवाड,

कु. शैलेजा कांबले, कु. सुजाता पाटील, कु. अर्चना जाधव, कु. वनिता उबाळे, आदि इन्होंने मेरी सहायता करके अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखने के लिए प्रोत्साहन दिया तथा उनकी प्रेरणा से ही मैं अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा करने में सफल रही हूँ। साथ ही मेरे सहपाठियों में कु. छाया, कु. विजया, कु. रूपाली, कु. शैलेजा, कु. सुषमा आदि। इनकी सदिच्छा से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ इन सभी की मैं आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापीत करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे ग्रंथ उपलब्ध करा दिए। साथ ही मुझे प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से सहकार्य किया। टंक लेखन करनेवाले श्री. विनायक पाटील ने इस लघु शोध-प्रबंध को सुयोग्य रूप से मुद्रित किया और यह कार्य उन्होंने शीघ्रता से किया मैं उनकी आभारी हूँ।

अंत में जिनका मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग मिला उन सभी परिचितों एवं अपरिचितों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मैं अपना यह लघु-शोध प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ परिक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर. **शोध छात्रा**

तिथि :

कु. विद्या अप्पासाहेब देसाई

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व । (1-28)

1.1 कलम के सिपाही

1.2 साहित्य और समाज

1.3 मानव जीवन और साहित्य

1.4 साहित्य की उपयोगिता

1.5 हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद

✷ **प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

1.6 व्यक्तित्व (जीवनरेखा)

1.6.1 जन्म

1.6.2 माता-पिता

1.6.3 शिक्षा

1.6.4 नौकरी

1.6.5 विवाह

1.6.6 मृत्यु

1.7 व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू

1.7.1 कठोर परिश्रमी

1.7.2 सच्चे समाज सुधारक

1.7.3 देशभक्त

1.7.4 गांधीवादी से प्रभावित प्रेमचंद

1.7.5 आदर्श की स्थापना करनेवाले साहित्यकार प्रेमचंद

1.7.6 प्रेमचंद का साहित्यिक श्रीगणेश

1.8 प्रेमचंद का कृतित्व
1.8.1 उपन्यासकार प्रेमचंद
1.8.2 कहानीकार प्रेमचंद
1.8.3 नाटककार प्रेमचंद
1.8.4 पत्रकार प्रेमचंद
1.8.5 निबंधकार प्रेमचंद
1.8.6 अनुवाद ग्रंथ
1.8.7 बालसाहित्य - शिशु साहित्य
✷ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – साहित्यकार प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों का संक्षिप्त परिचय। (29-81)

2.1 नाटक की व्युत्पत्ति
2.2 नाटक का विकास
2.2.1 प्रसाद युग
2.2.2 द्विवेदी युग
2.2.3 आधुनिक युग
2.3 नाट्य भाषा
2.3.1 नाटकीय संरचना और भाषा
2.3.2 नाटक की भाषिक संरचना
2.3.3 संवाद संरचना और प्रकार्य
2.3.4 संवाद और रंगमंच
2.3.5 नाट्य संरचना और शैलीय उपकरण
2.4 प्रेमचंद युगीन नाट्य साहित्य
2.5 नाटककार प्रेमचंद

2.6	*नाटक लिखने की प्रेरणा*
2.7	*कथावस्तु का विवेचन*
2.7.1	कथावस्तु
2.7.2	कथावस्तु के प्रकार
	(आधिकारिक, प्रासंगिक कथावस्तु)
2.8	*कथावस्तु के उपकरण*
2.8.1	अर्थप्रकृतियाँ
2.8.2	कार्यवस्थायें
2.8.3	सन्धिस्थल
✷	**नाटकों की कथावस्तु**
2.9	*संग्राम*
2.9.1	मुख्य या आधिकारिक कथा
2.9.2	प्रासंगिक कथा
2.9.3	कथावस्तु का विकास
2.10	*कर्बला*
2.10.1	मुख्य या आधिकारिक कथा
2.10.2	प्रासंगिक कथा
2.10.3	कथावस्तु का विकास
✷	*निष्कर्ष*

तृतीय अध्याय – प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों की रंगमंचीयता।

(82-113)

3.1	*रंगमंच*
3.2	*रंगमंच शब्द का अर्थ*
3.3	*रंगमंच की परिभाषा*

3.4	*रंगमंच की व्युत्पत्ति*
3.5	*मंचसज्जा*
3.5.1	चित्रांकित मंचसज्जा
3.5.2	प्रकृतिवादी मंचसज्जा
3.5.3	प्रतीक मंचसज्जा
3.6	*रंगमंच का विकास*
3.6.1	भारतेंदुयुगीन हिंदी रंगमंच
3.6.2	प्रसादयुगीन हिंदी रंगमंच
3.6.3	प्रेमचंदयुगीन रंगमंच
3.7	*रंगमंच के उपकरण*
3.7.1	दृश्य योजना
3.7.2	ध्वनि संकेत
3.7.3	गीत योजना
3.7.4	संवाद योजना
3.7.5	प्रकाश योजना
3.7.6	वेशभूषा एवं केशभूषा
3.8	*रंगमंचीय प्रस्तुती और दर्शकीय संवेदना*
3.9	*प्रेमचंद के नाटकों में रंगमंचीयता*
✷	*निष्कर्ष*

चतुर्थ अध्याय – प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों में अभिनय। (114-142)

4.1	*अभिनय*
4.2	*अभिनय शब्द की व्युत्पत्ति*
4.3	*अभिनय शब्द का कोशगत् अर्थ*
4.4	*अभिनय की परिभाषाएँ*

4.4.1	संस्कृत विद्वान
4.4.2	हिंदी विद्वान
4.4.3	अंग्रेजी विद्वान
4.5	*नाटक और अभिनय का संबंध*
4.6	*नाटक में अभिनेता का महत्त्व*
4.7	*अभिनय के प्रकार*
4.7.1	अंगिक अभिनय
4.7.2	वाचिक अभिनय
4.7.3	आहार्य अभिनय
4.7.4	सात्विक अभिनय
4.8	*अभिनय का विकास*
4.8.1	भारतेंदुयुगीन अभिनय
4.8.2	प्रसादयुगीन अभिनय
4.8.3	प्रेमचंदयुगीन अभिनय
4.9	*परिहास*
4.10	*प्रेमचंद के नाटकों की भाषा*
4.10.1	सरल एवं रोचक
4.10.2	सुबोध एवं स्पष्ट
4.10.3	पात्रानुकूलता
4.10.4	विषयानुकूल नाटकीय भाषा
4.11	*दृश्यविधान*
4.11.1	शीघ्र परिवर्तनशील
4.11.2	पात्रों के संचालन में सुलभता
4.11.3	पात्रानुकूलता
4.12	*संगीत एवं ध्वनि*

4.13 वेशभूषा

4.14 प्रकाश योजना

* निष्कर्ष

पंचम अध्याय – प्रेमचंद के आलोच्य नाटकों में प्रासंगिकता । (143-159)

5.1 प्रासंगिकता का कोशगत् अर्थ

5.1.1 नालंदा अद्यतन कोश में

5.1.2 राजपाल शब्द कोश में

5.1.3 नूतन पर्यायवाची विपर्याय कोश में

5.2 प्रेमचंद का प्रासंगिक दृष्टिकोण

5.3 प्रेमचंद साहित्य की प्रासंगिकता

5.4 'संग्राम' और 'कर्बला' की तत्कालीन प्रासंगिकता

5.4.1 जमींदारों और किसानों में पारस्परिक संघर्ष

5.4.1 कर्बला ऐतिहासिक संग्राम धर्म और ईमान का प्रतीक

5.4.2 जमींदारों की असलियत का एक जीवंत दस्तावेज

5.4.2 सांप्रदायिक वैमनस्य और सद्भाव का चित्रण

5.4.3 जमींदारों की मूल प्रवृत्ति - नारी लोलुपता

5.4.3 हुसैन में दीन-ईमान के प्रति बेहद आस्था

5.4.4 किसानों की गरीबी, बेबसी और गुलामी का चित्रण

5.4.4 यजीद अन्याय, अनाचार और कूरता का प्रतीक

5.4.5 भारतीय समाज में अंधविश्वास, मानसिकता और पाखंडी साधुओं का चित्रण

5.4.5 मजहब के वजह से हुसैन और यजीद में संघर्षवृत्ती

5.5 'संग्राम' और 'कर्बला' की समकालीन प्रासंगिकता

5.5.1 किसानों की संघर्षशील वृत्ती

5.5.2 किसान और जन की आर्थिक दशा - दिशा

5.5.3 प्रेमचंद का नारी के प्रती दृष्टिकोण

5.5.4 सामाजिक चेतना - ग्रामीण संदर्भ में

5.5.5 नाटक में वर्णित मुस्लिम संस्कृति

5.5.6 नाटक में गाँव का इतिहास

5.5.7 सांप्रदायिकता

✷ निष्कर्ष

✷ उपसंहार (160-164)

✷ सन्दर्भ ग्रंथ सूची (165-169)

आधार ग्रंथ

सन्दर्भ ग्रंथ

हिंदी कोश ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

समाचार पत्र